अध्याय 2

मूसा का आरंभिक जीवन

अध्याय 2, अध्याय 1 के मिस्रियों द्वारा इस्राएलियों का अपमान के संबंध में वृतांत जारी रखता है। यह कहानी को, एक परिवार और उस परिवार में जन्में एक बालक तक सीमित करता है। यहाँ से लेकर निर्गमन की पुस्तक के अंत तक यह मूसा के जीवन पर ही केन्द्रित रहती है। वस्तुतः यह सम्भव है कि पूरे व्यवस्था को मूसा की कहानी के रूप में देखा जा सकता है जिसमें उत्पत्ति और निर्गमन 1 इस कहानी का प्राक्कथन है। मूसा की कुल अवस्था 120 वर्ष की थी और इसको तीन अलग-अलग चालीस वर्ष के समान विभाजन के रूप में देखा जा सकता है (प्रेरितों. 7:23; निर्गमन 7:7; व्यव. 34:7)। उसने प्रथम चालीस वर्ष मिस्र के राजमहल में बिताया (2:1-15)। उसके जीवन के दूसरे चालीस वर्ष उसने मिद्यान में एक चरवाहे के रूप में बिताया (2:16-4:17)। और उसने अपने जीवन के अंतिम चालीस वर्ष इस्राएल के अगुवे के रूप में बिताया (निर्गमन 4:18 - व्यव. 34:8)।

एक खूबसूरत बालक, मूसा का जन्म उस समय हुआ जब इस्राएल के बालकों पर मृत्यु दंड की आज्ञा दी गई थी (2:1, 2; 1:22)। उसके माता पिता लेवी गोत्र के थे। जब तक हो सका मूसा की माँ ने उसे छिपाकर रखा, तब उसने टोकरी में रखकर कांसो के बीच नदी में उस स्थान पर छोड़ा जहाँ फ़िरौन की पुत्री ने उसे पाया (2:2-6)। मूसा की बहिन ने इब्री स्त्रियों में से बच्चे के लिए एक धाई का इंतज़ाम करने की बात कही। जब उसकी यह बात मान ली गई तो मूसा की माँ स्वयं उसकी धाई बनी (2:7-9)।

मूसा का पालन-पोषण तब तक फ़िरौन के घराने में हुआ जब तक कि उसने एक मिस्री को मार न डाला जो एक इस्राएली दास को पीट रहा था। इस मिस्री को मारने और गाड़ने के दूसरे दिन जब उसने आपस में लड़ रहे दो इस्राएलियों को छुड़ाने का प्रयास किया, तब उसको पता चला कि उसके अपराध का खुलासा हो चुका है। तब वह फ़िरौन के क्रोध से बचकर मिस्र से भाग निकला (2:10-15)।

मिस्र छोड़कर, मूसा मिद्यान देश गया। वहाँ उसने मिद्यानी याजक के सात पुत्रियों की रक्षा की। परिणामस्वरूप, याजक ने अपनी पुत्री सिप्पोरा से उसका विवाह कर दिया और तब उनको एक पुत्र, गेर्शोम पैदा हुआ (2:16-22)।

उसी समय मिस्र में, जो मूसा का प्राण लेना चाहते थे, उस फ़िरौन की मृत्यु हुई। इब्री लोग पीड़ा से कराह रहे थे, लेकिन परमेश्वर उनको छुड़ाने की तैयारी कर रहा था (2:23-25)।

मूसा का जन्म और आरंभिक जीवन (2:1-10)

**[1]लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवी वंश की स्त्री से विवाह कर लिया।
[2]वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह
बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। [3]जब वह उसे और छिपा न सकी
तब उसके लिये सरकंडों की एक टोकरी लेकर, उस पर चिकनी मिट्टी और राल
लगाई, और उसमें बालक को रखकर नील नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़
आई। [4]उस बालक की बहिन दूर खड़ी रही कि देखे उसका क्या हाल होगा। [5]तब
फ़िरौन की बेटी नहाने के लिये नदी के किनारे आई। उसकी सखियाँ नदी के किनारे-
किनारे टहलने लगीं। तब उसने कांसों के बीच टोकरी को देखकर अपनी दासी को
उसे ले आने के लिये भेजा। [6]जब उसने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक
है, तब उसे तरस आया और उसने कहा, "यह तो किसी इब्री का बालक होगा।"
[7]तब बालक की बहिन ने फ़िरौन की बेटी से कहा, "क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में
से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊँ, जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया
करे?" [8]फ़िरौन की बेटी ने कहा, "जा।" तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला
ले आई। [9]फ़िरौन की बेटी ने उससे कहा, "तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध
पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी।" तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध
पिलाने लगी। [10]जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फ़िरौन की बेटी के पास ले
गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, "मैं
ने इसको जल से निकाला था।"**

आयतें 1, 2. यह अनुच्छेद मूसा के बारे में कई तथ्य प्रकट करता है। सर्वप्रथम, वह **लेवी** के गोत्र का था। उसका वंशावली माता-पिता दोनों से ही लिया गया है जो उसके वंश की महत्व बताते हैं। कालांतर में परमेश्वर ने लेवी को इस्राएल का याजक होने के लिए नियुक्त किया।

दूसरी बात, मूसा **सुन्दर** (טוֹב, *तोव)* था। इस इब्रानी शब्द का कई अर्थ जैसे "मनोहर," "स्वीकार्य," और "अच्छा" है।[1] NRSV के अनुसार वह "एक अच्छा बच्चा था।"

तीसरी बात, मूसा का जन्म उस समय हुआ था जब इस्राएलियों के लिए दुःख का समय था। फ़िरौन ने सभी इस्राएलियों के बालकों को मार डालने का आदेश जारी किया था (1:22)। अपने बच्चे को बचाने के लिए मूसा की माँ (अभी तक जिनका नाम प्रकट नहीं किया गया है[2]) ने उसे **तीन महीने तक छिपा कर रखा**।

आयतें 3, 4. जब मूसा को छिपाया नहीं जा सकता था तो उसकी माँ ने उसे **सरकंडों की टोकरी** में रखा। उसने टोकरी को **नील नदी** के किनारे तैरने के लिए छोड़ दिया। यह कार्य दुःख से भरा हैः फ़िरौन ने इब्री बच्चों को नाश करने के लिए उन्हें नदी में फेंकने का आदेश जारी किया था (1:22), जबकि मूसा की माँ मूसा को नदी में इसलिए छोड़ आई ताकि उसको बचाया जा सके। उसके बाद उसने **उसकी बहन** (उसका नाम भी अब तक प्रकट नहीं किया गया है[3]) को यह देखने के

लिए निर्देशित किया कि देखे **उसका क्या हाल होगा**। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने मूसा के माता-पिता को विश्वास के इस कार्य के लिए उनकी सराहना की है (इब्रा. 11:23)।

KJV में "सरकंडे की टोकरी" के लिए "सरकंडों की जहाज" प्रयोग किया गया है जबकि NRSV में इसे "पपाइरस/भोजपत्री की टोकरी" प्रयोग किया गया है। "टोकरी" या "जहाज" के लिए תֵּבָה *(थेबाह)* शब्द प्रयोग किया गया है, जो नूह के जहाज के लिए उत्पत्ति 6-9 में भी प्रयोग किया गया है। वस्तुतः इब्रानी बाइबल में इस शब्द का प्रयोग केवल इन्हीं दो स्थानों में किया गया है। लेखक स्पष्ट रूप से यह चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि अन्य जीवन रक्षक छोटे नाव के समान ही मूसा के जीवन को इस छोटे नाव ने बचाया था। इन दोनों जहाजों को जल रोधी बनाने के लिए इसे **राल** से लेपा गया था (देखें उत्पत्ति 6:14)।

आयत 5. मूसा को उसके छोटे नाव में कांसो के बीच (סוּף, *सूप)* पानी में छोड़ दिया गया और **फ़िरौन की पुत्री** को वह टोकरी मिली। इस मिस्री राजकुमारी के नाम के बारे में भी पाठ कुछ नहीं बताता है। निस्संदेह, फ़िरौन की कई रानियाँ और कई बच्चे भी रहे होंगे। जबकि बाइबल यह स्पष्ट करती है कि मूसा का पालन पोषण पूरे शासकीय परंपरानुसार राजमहल में हुआ परंतु यह नहीं बताती कि मूसा का पालन पोषण हतशेप्सूत के द्वारा किया गया, जो कालांतर में मिस्र की महारानी बनी या फिर मूसा मिस्र का अगला राजा बनने जा रहा था।

क्या मूसा की माँ ने अपने बच्चे को ऐसे स्थान पर रखकर बुद्धिमानी जताई? क्या वह जानती थी कि यह वह स्थान है जहाँ फ़िरौन की पुत्रियाँ स्नान करने आया करतीं थीं? कम से कम यह तो पक्का है कि मूसा की माँ को पता था कि राजकुमारियाँ कहाँ स्नान किया करतीं थीं। उसने अपने बच्चे को इस आशा से उस स्थान पर छोड़ा होगा कि राजकुमारी उसके बालक पर तरस खाएगी।

आयतें 6-9. चाहे मूसा की माँ ने परिणाम न भी देखा हो, बच्चे के **रोने की आवाज** ने राजा के पुत्री में **तरस** जगाई। परिणाम यह निकला कि फ़िरौन की इस पुत्री ने इस बालक को अपना पुत्र करके पाला। यह असाधारण है कि उसकी बहिन के सुझाव के अनुसार, मूसा की **माँ** उसकी **देखभाल कर सकी** और उसे अपना दूध पिलाया। इससे भी बढ़कर, इस कार्य के लिए उसको मजदूरी भी दी गई! उसको उसी के घर में कुछ वर्षों तक उसकी देखभाल करने की अनुमति भी दी गई। जिस तरह आजकल बच्चों का दूध छुड़ाया जाता है वैसा उन दिनों में नहीं होता था, जिसकी पुष्टि हन्ना और उसके पुत्र शमूएल की कहानी के द्वारा होता है (1 शमूएल 1:20-28; 2:11)।

आयत 10. दूध छुड़ाने के बाद, मूसा का पालन पोषण **फ़िरौन की पुत्री के पुत्र** के रूप में हुआ। मूसा को उसकी माँ की संगति मिलने से यह निश्चित हो चुका था कि वह यह जानते हुए बड़ा हुआ कि पैदाइशी वह एक इस्राएली है और वह स्वर्ग और पृथ्वी के एक सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करता था। इस वृतांत में एक बड़ा भारी विडंबना हैः न केवल फ़िरौन इस्राएलियों को बढ़ने से रोक सका, परंतु, क्योंकि उसने इस्राएलियों को अपंग बनाने का प्रयास किया, इसलिए जिस व्यक्ति

ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुड़ाना था, उसका पालन-पोषण उसी के घराने में हुआ। छुड़ाने वाले बालक के रूप में उसका पालन-पोषण उसी की इब्री माँ द्वारा फ़िरौन के खर्चे पर किया गया।

बालक को **मूसा** नाम उसके मिस्री माता ने दिया। इब्रानी भाषा में इस शब्द का अर्थ "जल से निकाला हुआ" है। यद्यपि, मूसा एक मिस्री नाम है जिसकी गिनती "रामसेस" और "थुटमोस" जैसे बड़े नामों में होती है। यह निर्गमन की पृष्ठभूमि का अतिरिक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। नहूम एम. सारना के अनुसार, मिस्री भाषा में "मूसा" का अर्थ "पैदा होना" या "एक पुत्र होना" है; लेकिन यह इब्रानी रूपक है, מֹשֶׁה *(मोशेह)* का व्याख्या क्रिया रूप מָשָׁה *(माशाह)* किया जाता है, जिसका अर्थ "जल से बाहर निकालना है।" यह नाम संभवतः यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि न केवल परमेश्वर ने मूसा को जल से बचाया बल्कि परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को लाल समुद्र में डूबने से बचाकर उन्हें सुरक्षित स्थान में पहुँचाने के लिए कैसे प्रयोग किया।[4]

कई टीकाकारों का मानना है कि "निकाला हुआ" और मिस्री शब्द "मूसा" के समानता के कारण, इस शब्द का इब्रानी अर्थ लेखक ने जोड़ा होगा। इस व्याख्या की समस्या यह है कि यह पाठ को छूट प्रदान करता है, जिसमें यह कहा गया है कि फ़िरौन की पुत्री ने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा **क्योंकि मैंने इसको जल से निकाला था**। यदि कोई, जो पाठ कहता है, वैसे ही स्वीकार करता है तो समस्या यह उठती है कि कैसे एक मिस्री इब्रानी भाषा और मिस्री भाषा के युगल से उच्चारित होने वाले शब्दों को लेकर उसे मूसा नाम दे सकता है, जो कि दोनों भाषाओं में बहुत महत्वपूर्ण है। आर. एलेन कोल के अनुसार, "एक मिस्री स्वामिनी अपने दासी की भाषा समझ सकती है और वह उसका प्रयोग उसको आदेश देने के लिए कर सकती है।"[5]

अन्य प्राचीन दक्षिण पूर्व देशों की कहानियों में मूसा को टोकरी में रखना और राजकुमारी का उसको मिलना, कुछ सीमा रेखा तक एक जैसा है। उदाहरण के लिए, एक अक्कादी राजा सारगोन, जो ईसा पूर्व तीसरी सदी में था, के बारे में यह कहानी प्रचलित है कि उसको टोकरी में रखकर फरात नदी में छोड़ दिया गया था और बाद में राजा बनने से पहले, उसको किसी "पानी भरने वाले" ने पाया और गोद ले लिया था।[6]

परंतु, सारना ने उस कहानी (और दूसरे संस्कृति से मिलती-जुलती कहानी) और मूसा के कहानी में एक बड़ा अंतर बताया। उदाहरण के लिए, "सारगोन को जल में इसलिए छोड़ दिया गया था क्योंकि वह एक नाजायज संबंध द्वारा जन्मा बच्चा था"; इसके विपरीत, मूसा को नदी में एक प्रेमी माँ ने तब रखा जब उसे ऐसा करने के लिए विवश होना पड़ा था और उसके बाद भी उसकी माँ की ममता इस बात में दिखाई देती है जब उसने उसकी बहिन को यह देखने के लिए कहा कि देखे उस बालक का क्या हाल होता है। एक साधारण व्यक्ति ने सारगोन को पाया, और इस कहानी के नायक ने अपनी सच्ची पहचान बाद में पाई; लेकिन मूसा को अपनी पहचान बहुत जल्दी ही पता चल गई थी क्योंकि उसी की माँ ने ही उसकी देखभाल

की थी (और उसे अपनी वंशावली ढूँढने की आवश्यकता भी नहीं थी)। दूसरे शब्दों में, जैसे सारना ने कहा, "इस लोककथा और हमारे निर्गमन के वृतांत के बीच समानता केवल मनगढ़ंत है।"[7] यह दावा करना कि इस प्रकार की कहानी मूसा की कथा को ऐतिहासिक घटना होने के बजाय काल्पनिक बताना है, अविधिमान्य है।

मूसा द्वारा छुटकारा दिलाने के प्रयास (2:11-15)

निर्गमन 2:11-22 मूसा के जीवन के अगले चालीस वर्षों की कहानी बताता है। उसके जीवन के इस चरण का आरंभ दो घटनाओं के साथ हुआ: पहला, उसने एक मिस्री को मार डाला और उसे मिस्र से अपना घर छोड़कर भागना पड़ा (2:11-15)। दूसरा, उसने रूएल की पुत्रियों की रक्षा की और परिणामस्वरूप उसे एक पत्नी और घर मिल गया (2:16-22)।

[11]ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हुआ, और बाहर अपने भाई बन्धुओं के पास जा कर उनके दु:खों पर दृष्टि करने लगा; तब उसने देखा, कि एक मिस्री जन उसके एक इब्री भाई को मार रहा है। [12]उसने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है, तब उस मिस्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया। [13]फिर दूसरे दिन बाहर जा कर उसने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं; उसने अपराधी से कहा, "तू अपने भाई को क्यों मारता है?" [14]उसने कहा, "किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस भांति तू ने मिस्री को घात किया क्या उसी भांति तू मुझे भी घात करना चाहता है?" तब मूसा यह सोचकर डर गया, कि "निश्चय वह बात खुल गई है।" [15]जब फ़िरौन ने यह बात सुनी तब मूसा को घात करने की युक्ति की। तब मूसा फ़िरौन के साम्हने से भागा, और मिद्यान देश में जा कर रहने लगा; और वह वहां एक कुएं के पास बैठ गया।

आयतें 11, 12. लेख से प्रतीत होता है कि **मूसा** ने, अनुकम्पा के कारण, अपने लोगों को अत्याचार से छुड़ाने के लिए, बुलाहट अनुभव की। इसी कारण से उसने **एक मिस्री** को मार डाला जो **एक इब्री** के साथ दुर्व्यवहार कर रहा था। फिर उसने उसे (उसकी देह को) **बालू में छिपा दिया**। चाहे मूसा क्रोध में था, परन्तु उसने समझ-बूझ नहीं छोड़ी थी। जो उसने किया वह पहले से विचार के साथ था: **उसने इधर उधर देखा।** लेख उसके कृत्य का बचाव नहीं करता है; इसलिए, पाठक इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए कदापि बाध्य नहीं हैं कि मूसा ने सही किया। न ही हमें यह पूर्वधारणा बना लेनी चाहिए कि यह खण्ड किसी गलत को सही करने के लिए हत्या करने का पूर्ववर्ती उदाहरण प्रस्तुत करता है।[8]

आयतें 13-15. फिर दूसरे दिन मूसा ने **दो इब्री पुरुषों** के बीच हो रही मारपीट को रोकने का प्रयास, अपराधी से यह कहकर कि **"तू अपने भाई को क्यों मारता है?"** किया। **अपराधी** ने प्रत्युत्तर दिया, **"किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस भांति तू ने मिस्री को घात किया क्या उसी भांति तू मुझे भी घात करना चाहता है?"** अधिक संभावना यह है कि कटाक्ष के रूप में पूछे गए

ये प्रश्न, उस व्यक्ति द्वारा मूसा के अधिकार को अस्वीकार करना दिखाते हैं। फिर भी, परमेश्वर के समय में, बाद में मूसा सभी इस्राएली लोगों का अगुवा बन गया।

जब **मूसा** को यह ज्ञात हुआ कि अन्य लोग जानते हैं कि उसने एक मिस्री को मार डाला है, तब वह **डर** गया। उसके पास इसका पर्याप्त कारण था, क्योंकि जब **फ़िरौन** को मूसा द्वारा की गई बात पता चली, तो उसने **मूसा को घात करने की युक्ति की**। "मिस्री बहुत अधिक जातिगत अभिमान रखते थे जिसके अन्तर्गत वे परदेशियों को अपने से नीचा समझते थे। एक परदेशी के लिए किसी मिस्री को मार डालना घोर अपराध था।"[9]

स्तिफनुस ने इस घटना का विस्तृत विवरण दिया (प्रेरितों 7:23-29), जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने भी किया (इब्रा. 11:24-27)। नया नियम के इन लेखकों ने इस घटना की अपनी व्याख्या में इन बातों को भी जोड़ दिया: (1) उस समय मूसा लगभग 40 वर्ष का था (प्रेरितों 7:23)। (2) "मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातों और कामों में सामर्थी था" (प्रेरितों 7:22), और "मिस्र के भण्डार" तक उसकी पहुँच थी (इब्रा. 11:26)। (3) मूसा ने मिस्री राजकुमार रह कर जीवन का आनन्द लेने की अपेक्षा, जान-बूझकर इस्राएलियों के पक्ष में जाने का निर्णय किया (इब्रा. 11:24-26)। (4) विशेषतयः, मूसा ने अपने आप को इस्राएल का छुड़ाने वाला समझा था। इसका संकेत हमें निर्गमन 2:11 में मिलता है, परन्तु इसका विशिष्ट उल्लेख प्रेरितों के काम 7:23-25 में मिलता है। (5) इब्रानियों 11:27 के अनुसार, मूसा मिस्री राजा के कोप से भयभीत नहीं था।

मूसा के भयभीत न होने के उल्लेख से समस्या उत्पन्न होती है। यद्यपि इब्रानियों कहता है कि "राजा के क्रोध से न डर कर उसने मिस्र को छोड़ दिया" (इब्रा. 11:27), किंतु निर्गमन 2:14 कहता है कि जब मूसा को पता चला कि और लोग भी जानते हैं कि उसने मिस्री को मार डाला है, तो यह सोचकर, **"कि निश्चय वह बात खुल गई है"** वह "डर गया।"

ऐसा कैसे हो सकता है कि प्रेरणा पाया हुआ एक लेखक कहता है कि वह डर गया और दूसरा कहता है कि वह नहीं डरा? इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि इब्रानियों का लेखक पुराने नियम से भली-भांति अवगत था और निर्गमन की बात काटने का उसका कोई आशय नहीं था। यद्यपि निर्गमन 2:14 यह कहता है कि मूसा डर गया था, लेख यह नहीं कहता है कि मूसा ने मिस्र अपने डर के कारण छोड़ा। संभवतः मूसा के पास फ़िरौन के कोप का सामना करने के अन्य विकल्प भी थे। इसके अतिरिक्त, इब्रानियों इस बात से इनकार नहीं करता है कि मूसा डर गया था परन्तु कहता है कि वह उसका डर नहीं, विश्वास था, जिस के कारण उसने मिस्र को छोड़ा।[10]

मूसा भागकर **मिद्यान देश** में जा कर रहने लगा। वहाँ के लोग, मिद्यानी, अब्राहम के, उसकी पत्नी कतूरा से, वंशज थे (उत्पत्ति 25:2)। उस समय मिद्यान देश में सीनै प्रायद्वीप का एक भाग भी सम्मिलित था (3:1 पर टिप्पणी देखें)। इस इलाके में - उसी देश में जिसमें अंततः वह इस्राएलियों का नेतृत्व कर के लाने वाला था - मूसा ने अपने जीवन के अगले चालीस वर्ष बिताए।

मिद्यान में मूसा का जीवन (2:16-22)

[16]मिद्यान के याजक की सात बेटियां थी; और वे वहां आकर जल भरने लगीं, कि कठौतों में भर के अपने पिता की भेड़-बकरियों को पिलाएं। [17]तब चरवाहे आकर उन को हटाने लगे; इस पर मूसा ने खड़े हो कर उनकी सहायता की, और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। [18]जब वे अपने पिता रूएल के पास लौटीं, तब उसने उन से पूछा, "क्या कारण है कि आज तुम इतनी जल्दी लौट आई हो?" [19]उन्होंने कहा, "एक मिस्री पुरुष ने हम को चरवाहों के हाथ से छुड़ाया, और हमारे लिये बहुत जल भर के भेड़-बकरियों को पिलाया।" [20]तब उसने अपनी बेटियों से कहा, "वह पुरुष कहां है? तुम उसको क्यों छोड़ आई हो? उसको बुला ले आओ कि वह भोजन करे।" [21]और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को तैयार हुआ; उसने उससे अपनी बेटी सिप्पोरा का विवाह कर दिया। [22]उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मूसा ने यह कहकर, "मैं अन्य देश में परदेशी हूं," उसका नाम गेर्शोम रखा।

आयतें 16, 17. मिद्यान में मूसा "एक कुएँ के पास बैठ गया" (2:15) और वहाँ **मिद्यान के याजक की सात बेटियों** की कुछ **चरवाहों** से, जो उन्हें भेड़ों को पानी पिलाने से रोक रहे थे, रक्षा की। प्रतीत होता है कि मूसा में दबे हुओं की सहायता करने की लालसा थी; इस अध्याय में यह तीसरी बार है जब उसने उस की सहायता की जिस पर अत्याचार किया जा रहा हो। पहले, उसने इस्राएली को पीटने वाले मिस्री को मार डाला, फिर उसने अपने साथी इस्राएली से दुराचार झेल रहे इस्राएली की सहायता करने का प्रयास किया। हो सकता है कि दबे हुओं की सहायता करने की उसकी लालसा उसके गुणों में से एक था जिस से वह आदर्श छुड़ाने वाला बना।

आयत 18. लड़की के पिता को आयत 16 में "मिद्यान का याजक" कह कर संबोधित किया गया है, परन्तु यहाँ उसकी पहचान **रूएल** नाम से की गई है। मिद्यान के याजक को सामान्यतः या तो "यित्रो" (3:1; 4:18; 18:1) या "होबाब" (गिनती 10:29) कहा गया है। इब्रानी भाषा में गिनती 10:29 का लेख अनेकार्थक है, जिस से या तो रूएल या होबाब मूसा का ससुर हो सकता है। परन्तु न्यायियों 4:11 होबाब को मूसा का ससुर, और बहुत संभव है कि रूएल को होबाब का पिता चिंहित करता है।[11] इन खण्डों की अन्य व्याख्याएँ भी संभव हैं; सामान्यतः यित्रो और रूएल मूसा के ससुर के वैकल्पिक नाम माने जाते हैं।

आयत 19. अपनी बेटी को शीघ्र लौट आया देख रूएल के चकित होने पर (2:18), उन्होंने उत्तर दिया कि **एक मिस्री** ने उनकी सहायता की थी। इस खण्ड से जो मूसा का चित्र उभरता है वह एक इस्राएली का है जो पूर्णतः मिस्री हो चुका था - कम से कम दिखने और बोलने में। परन्तु फिर भी, उसे दबे हुओं की चिंता थी और वह उनको छुड़ाने के लिए कार्यवाही करने के लिए तैयार था। वह शरीर से सबल था; अन्यथा वह न तो मिस्री को मारने पाता और न ही **चरवाहों** को भगाने पाता। वह अपने आप को परदेश में रहने के लिए सक्षम करने पाया।

आयत 20. उस सारे हंगामे में, रूएल की बेटियाँ अपने छुड़ाने वाले के प्रति अतिथि-सत्कार के शिष्टाचार को भूल गईं। परिणाम स्वरूप उनके पिता ने दोहराए गए प्रश्नों से उन्हें झिड़की दी: **"वह पुरुष कहां है? तुम उसको क्यों छोड़ आई हो?"** रूएल ने फिर एक सीधी आज्ञा के साथ समाप्त किया: **"उसको बुला ले आओ कि वह भोजन करे।"**

आयतें 21, 22. मूसा के भलाई के कार्य का परिणाम यह हुआ कि उसे लड़कियों के पिता के घर आने का निमंत्रण मिला, जिसने फिर उससे **अपनी बेटी सिप्पोरा** का विवाह करवा दिया। उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उन्होंने **गेर्शोम** (גֵּרְשֹׁם, *गेरशोम*) रखा। यह नाम इब्रानी शब्द *गेर* (גֵּר) से संबंधित है, और इसका अर्थ है "परदेशी" या "अजनबी," जो इस बात पर जोर देता है कि मूसा ने, मिद्यान में अपने दिनों के दौरान, अपने आप को "अन्य देश में परदेशी" देखा (2:22; KJV)।[12]

ब्रेवार्ड एस. चाइल्ड्स ने मूसा द्वारा मिस्र में से इस्राएल को (2:11-15) और मिद्यान में रूएल की बेटियों को (2:16-22) छुड़ाने के प्रयासों में रोचक समानताओं और भिन्नताओं को दिखाया है। दोनों ही कहानियाँ मूसा के "निर्बलों के प्रति सक्रिय चिंता को दिखाती हैं, जो देश और लोगों की संकीर्ण सीमाओं बढ़कर था," और दोनों ही मूसा के बाध्य होकर "अपने लोगों से, जिन्हें वह छुड़ा नहीं पाया था, अलग रहने" पर बल देती हैं। परन्तु विवरण में तीन भिन्नताएं हैं। (1) पहली कहानी में, मूसा का शत्रु मिस्त्री था जो मूसा के लोगों को सता रहा था; दूसरी में, मूसा को ही लोगों को सताने वाला मिस्त्री समझा लिया गया था। (2) पहली में झगड़ा एक मिस्त्री और एक इब्री के मध्य था; दूसरी में झगड़ा गैर-इस्राएलियों में था। (3) पहली में, मूसा को अपना घर छोड़ना पड़ा था; दूसरी में उसे एक घर मिल गया था।[13]

इस्राएलियों की परमेश्वर से दोहाई (2:23-25)

[23]बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस ले कर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुंची। [24]परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी थी, स्मरण किया। [25]और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि कर के उन पर चित्त लगाया।

आयतें 23-25. अध्याय 2 के अन्त में आकर दृश्य पुनः **मिस्र** की ओर लौट जाता है। **वह राजा** जो मूसा को घात करना चाहता था **मर** गया है, परन्तु इससे इस्राएलियों के लिए जीवन सहज नहीं हुआ। अपने दासत्व में, वे छुड़ाए जाने के लिए **परमेश्वर को पुकार उठे। परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को**, जो पितरों के **साथ बांधी गई थी, स्मरण किया**। अंततः वह समय आ गया जब

परमेश्वर ने अपने लोगों, **अब्राहम** के वंशजों, के पक्ष में कार्य करना था।

कोल ने लिखा, "यह कहना कि परमेश्वर 'स्मरण' करता है इस बात की पुष्टि करना है कि वह अपने बचाने के अनुग्रह को अपनी प्रजा इस्राएल के प्रति बारंबार करता है, और इस प्रकार अपनी वाचाओं को पूरा करता है, और अपनी स्वयंभू-स्थिरता को दिखाता है।"[14] यह समझने के लिए कि क्या अर्थ होता है जब परमेश्वर इस्राएल को "स्मरण" करता है, हमें ध्यान करना चाहिए कि परमेश्वर इस्राएल को "भुला" भी सकता है, जैसा कि इन खंडों में दिया है:

> तू ने क्यों हम को सदा के लिये भुला दिया है,
> और क्यों बहुत काल के लिये हमें छोड़ दिया है? (विलाप. 5:20)।

> इसलिये कि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है,
> मैं भी तेरे लड़के-बालों को छोड़ दूंगा। (होशे 4:6)।

"भुला देना," का अर्थ "छोड़ देना" है। "स्मरण" करना, ऐसे कार्य करना है जिससे वह आशीष पाए जिसे स्मरण किया गया है। वास्तव में **परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि कर के उन पर चित्त लगाया।**

अनुप्रयोग

मूसा और मसीह (अध्याय 2)

मूसा और यीशु मसीह के जीवनों में अनोखी समानताएं हैं। बाइबल हमें दोनों की तुलना करने का निमंत्रण देती है, विशेषतया इस तथ्य के कारण कि मूसा ने कहा था, "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा" (व्यव. 18:15), जो कि यीशु के आगमन द्वारा पूरा हुआ वचन है (प्रेरितों 3:22; देखें यूहन्ना 1:21, 25; 6:14; 7:40)। वे किन बातों में समान थे? वे कैसे भिन्न थे? हम इन तुलनाओं से क्या शिक्षा ले सकते हैं?

दोनों मूसा और मसीह सताव के दिनों में जन्में थे। जब हम मिस्र में सभी नर बच्चों को मार डालने की फ़िरौन की आज्ञा के बारे में पढ़ते हैं, हमारे मन उससे आगे के समय में हुई एक अन्य घटना की ओर जाते हैं - जब हेरोदेस ने आज्ञा दी कि दो वर्ष और उससे कम के सभी लड़कों को मार डाला जाए (मत्ती 2:16)। दोनों ही परिस्थितियों में, परमेश्वर का दूत - परमेश्वर की सहायता से - मृत्यु से बच गया। जब मूसा जन्मा, तब मिस्री शासक सभी इब्री लड़कों को मारने का प्रयास कर रहा था। यीशु के जन्म के कुछ ही समय पश्चात, यहूदिया के शासक हेरोदेस ने सभी इस्राएली नर शिशुओं को मार डालने का प्रयास किया। मूसा और यीशु दोनों मौत से बच निकले, परमेश्वर की सहायता से।

दोनों मूसा और यीशु ने अनुकरणीय जीवन जिया। दोनों के लिए कहा गया है कि वे "नम्र" थे (गिनती 12:3; मत्ती 11:28-30)। दोनों ही अपने लोगों से प्रेम करते थे, उनके लिए अपनी व्यक्तिगत महिमा को छोड़ दिया, और उनके लिए

मध्यस्थता की (देखें निर्गमन 32:11-14; मत्ती 23:37-39; यूहन्ना 17)।

अवश्य ही दोनों में भिन्नताएं हैं। जबकि मूसा ने प्रशंसनीय जीवन जिया (इब्रा. 11:23-29), वह पाप का दोषी था (निर्गमन 2:11-15; गिनती 20:1-13)। तुलना में, यीशु ने निष्पाप जीवन जिया (इब्रा. 4:15)। मूसा ने लोगों के पाप को अपने ऊपर लेना चाहा - उसके इस प्रस्ताव को परमेश्वर ने नकार दिया (निर्गमन 32:32)। परन्तु यीशु यह कर सका और लोगों के पाप अपने ऊपर ले लिए। उन्होंने ऐसा न केवल यहूदियों के लिए, वरन सभी लोगों के लिए किया (मत्ती 26:28; 2 कुरि. 5:21)।

दोनों मूसा और मसीह परमेश्वर के प्रवक्ता थे। मूसा के द्वारा व्यवस्था आई (यूहन्ना 1:17); परन्तु जब मसीह आया, वह परमेश्वर का प्रवक्ता बन गया (इब्रा. 1:1, 2; यूहन्ना 3:34; 7:16-18)। एक अर्थ में, मसीह नई व्यवस्था का देने वाला है (गला. 6:2), यद्यपि उसने कोई "वैधानिक" प्रणाली स्थापित नहीं की। दोनों व्यवस्थाएं भिन्न रीतियों से दी गईं: एक मूसा के द्वारा आई, प्रज्वलित पहाड़ से (इब्रा. 12:18-24); दूसरी तब दी गई जब मसीह एक अन्य पहाड़ पर शान्त रीति से शिक्षा दे रहा था (मत्ती 5-7)। आज हमें मसीह को सुनना है न की मूसा को (मत्ती 17:5; यूहन्ना 1:17; इब्रा. 1:1, 2)।

दोनों मूसा और मसीह ने आश्चर्यकर्म किए। परमेश्वर के प्रवक्ता और छुड़ाने वाले की रूप में, मूसा को चिन्ह दिखाने की क्षमता चाहिए थी जिससे कि दोनों इस्राएली और मिस्री जान जाएँ कि वह परमेश्वर का दूत है। इसी रीति से यीशु ने आश्चर्यकर्म किए इस बात की पुष्टि करने के लिए कि वह परमेश्वर की ओर से आया नबी और शिक्षक है (प्रेरितों 2:22; यूहन्ना 3:1, 2; 20:30, 31)। दोनों के मध्य भिन्नता यह है कि मूसा अपनी मृत्यु के पश्चात मरा ही रहा। यीशु तीन दिन के बाद मृतकों में से जी उठा।

दोनों मूसा और मसीह ने परमेश्वर के लोगों को छुड़ाया। मूसा महान छुड़ाने वाला बनकर आया, वह दूत जिसे परमेश्वर ने परमेश्वर के लोगों को दासत्व से छुड़ाने के लिए प्रयोग किया। मसीह भी छुड़ाने वाला बनकर आया, मानवजाति को पाप के दासत्व से छुड़ाने के लिए (लूका 19:10; यूहन्ना 8:32)। मूसा ने अपना दायित्व (कुछ अंश तक) निर्दोष मेमने बलि चढ़ा कर निभाया (निर्गमन 12); मसीह ने अपना कार्य अपने ही बलिदान के द्वारा पूरा किया (यूहन्ना 10:15-18)।

दोनों मूसा और मसीह ने विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए स्वर्गीय प्रतिफल पाया। हम मूसा के अनन्त उद्धार के प्रति शंका नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह रूपांतरण के समय यीशु के साथ प्रगट हुआ। इसी रीति से, यीशु, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात महिमान्वित हुआ (प्रेरितों. 2:36; फिलि. 2:9-11)। निश्चय ही मसीह और मूसा के मध्य एक अन्य भिन्नता है कि परमेश्वर ने कभी यह प्रतिज्ञा नहीं दी कि कोई मूसा का अनुसरण कर के उसके अनन्त उद्धार का संभागी हो सकता है, परन्तु यीशु अपने अनुसरण करने वालों को अपनी महिमा में संभागी कर सकता है और करना भी चाहता है (प्रका. 3:21)।[15]

उपसंहार। जैसे कि अनेकों ने मूसा का अनुसरण किया और व्यवस्था के प्रति

निष्ठावान रहे, हमें भी अनुसरण करने के लिए दृढ़ निश्चय - और निष्ठावान - रहना है अपने प्रभु यीशु का अनुसरण करने और उसके द्वारा आए प्रकाशन का पालन करने के प्रति! यदि हम ऐसा करने में असफल रहते हैं तो हम उनसे अधिक बड़े खतरे मैं हैं जो मूसा के शब्दों का पालन करने में असफल रहे थे (इब्रा. 2:1-4)।

इस्राएल के छुटकारे में परमेश्वर का प्रावधान (अध्याय 2)

परमेश्वर के प्रावधान के कारण, इस्राएली मिस्र में थे। परमेश्वर का प्रावधान और देखभाल फ़िरौन द्वारा इस्राएल की बढ़ोतरी को रोकने में विफल रहने तथा मूसा के फ़िरौन के घर में बड़े होने और फिर चालीस वर्ष मिद्यान के बियाबान में बिताने में दिखाई देता है। लेकिन फिर भी परमेश्वर के प्रावधान में दो तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए। (1) यद्यपि परमेश्वर बुराई (पाप) नहीं करवाता है, परन्तु वह मनुष्यों के पापमय कार्यों से भी भला उत्पन्न कर सकता है (रोमियों 8:28)। इस्राएली शिशुओं की हत्या करवाना पाप था, परन्तु उस पाप में से भी परमेश्वर ने भला उत्पन्न किया। (2) परमेश्वर के प्रावधानों में लोगों की भी भूमिका होती है। उस बात के बारे में सोचिए कि मूसा की माँ ने अपने शिशु को किस प्रकार से रखा जिससे कि वह बचने पाया। अवश्य ही यह एक ऐसी घटना थी जहाँ परमेश्वर ने मनुष्य की बुद्धिमता को अपना कार्य करवाने के लिए उपयोग किया। जब हमारे सबसे बुद्धिमतापूर्ण, सबसे कुशल प्रयास परमेश्वर द्वारा उपलब्ध करवाए गए अवसरों के साथ मिलते हैं, परमेश्वर का प्रावधान हम में होकर कार्य करता है।

मूसा की माँ - एक उदाहरण निःस्वार्थ मातृत्व का (2:1-10)

मूसा की माँ अपने बच्चे से प्रेम करते थी और, परमेश्वर की सहायता से, सफलतापूर्वक उसकी जान बचाई और उसकी दाई भी बन गई। शमूएल की माँ के समान, जब दाई होने का कार्य पूरा हो गया, तो वह उसे परमेश्वर के कार्य के लिए दे देने को तैयार थी। मूसा की माँ भी उसे फ़िरौन की बेटी के पास लेकर गई, उसके भले के लिए और अंततः इस्राएल के भले के लिए। माताओं में इस बात की समझ होनी चाहिए कि उनका दायित्व है कि वे अपने बच्चों की देखभाल करें जब वे छोटे हैं, परन्तु जब वे बड़े हो जाएँ तो उन्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए छोड़ देने के लिए तैयार रहें।

मूसा का निर्णय (2:11-22)

निर्गमन 2, मूसा द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के लिए मिस्र के सुख-विलास तथा महिमा को छोड़ने पर एक प्रचार सन्देश तैयार करने के लिए बहुत उत्तम विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। इस सन्देश के मुख्य विचार इब्रानियों 11:24-27 से मिल सकते हैं।

मनुष्य के गुण और परमेश्वर की बुलाहट (2:11-22)

निर्गमन 2 मूसा को न्याय के प्रति चिंतित व्यक्ति प्रस्तुत करता है, सताए हुओं को छुड़ाने के लिए दृढ़ निश्चय। परमेश्वर ने उसके गुणों तथा चिंताओं को पहचाना और उसे अपने लोगों को छुड़ाने के लिए बुलाया। इस परिस्थिति का अवलोकन करने का एक दूसरा दृष्टिकोण है: परमेश्वर ने मूसा को छुड़ाने वाला बनने के गुण दिए, और मूसा ने उन गुणों को अपने जीवन में शीघ्र प्रगट किया। प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप से प्रश्न करना चाहिए, "परमेश्वर ने मुझे कौन से गुण प्रदान किए हैं? मेरे गुणों को ध्यान में रखते हुए परमेश्वर ने मुझे क्या करने के लिए बुलाया है?"

समाप्ति नोट्स

[1]देखें फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर और, चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *द ब्राऊन-ड्राइवर-ब्रिग्गस हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकन* (बॉस्टनः हूटन, मिफ्लिन एण्ड कम्पनी, 1906; पुनर्मुद्रित, पीबॉडी, मास्साचुसेट्सः हेन्ड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1997), 373-75. [2]मूसा के माता-पिता योकेबेद और अम्राम की पहचान निर्गमान 6:20 में की गई है। [3]मूसा की बहिन, मरियम, का सबसे पहले निर्गमन 15:20 में भविष्यद्वक्तिन और हारून के बहिन के रूप में उल्लेख किया गया है। [4]नहूम एम. सारना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरिजीन आफ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्कः शोक्केन बुक्स, 1996), 32-33. [5]आर. एलेन कोल, *एक्सोडसः एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 59. [6]सारना, 29-30. [7]उपरोक्त, 30. [8]पुराने नियम के सभी लेखों में, लेखक का उद्देश्य होता था कि किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानी बताई जाए, न कि कहानी के पात्रों के कार्यों के द्वारा कोई नैतिकता की शिक्षाएँ दी जाएँ, चाहे वे पात्र "विश्वास के नायकों" में से ही क्यों न हों। इसलिए पाठकों को यह धारणा नहीं रखनी चाहिए कि यदि किसी भक्त व्यक्ति ने कुछ ऐसा किया है जो बुरा प्रतीत होता है, तो उसका वह कार्य भी वास्तव में भला ही होगा। [9]जौन एच. वॉल्टन एण्ड विक्टर एच. मैथ्यूस, *जेनिसिस-ड्यूट्रौनमी*, द आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कॉमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1997), 87. [10]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्ल टू द हीब्रूस*, द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: वम. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1964), 321-22.

[11]निर्गमन 2:18 पर टिप्पणी, ब्रूस एम. मेट्ज़गर एण्ड रॉलेंड ई. मर्फी, संपादक, *द न्यू ऑक्सफर्ड एनोटेटिड बाइबल विद द ऐपोक्रिफा*, रिव. एण्ड एनल. (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1991), 71. [12]जौन आई. डरहैम ने, अधिकांश व्याख्याकर्ताओं की तुलना में, जोर दिया कि मूसा मिस्र को वह देश बता रहा था जहाँ वह अजनबी था। (जौन आई. डरहैम, *एक्सोडस*, वर्ड बिबलिक्ल कॉमेन्ट्री, वोल. 3 [वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987], 23-24.) [13]ब्रेवार्ड एस. चाइल्ड्स, *द बुक ऑफ एक्सोडस: ए क्रिटिकल, थियोलौजिकल कॉमेन्ट्री,* द ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (लूईविल्ले: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1974), 32. [14]कोल, 24. [15]और भी बातें हैं जिनमें मूसा और मसीह की तुलना हो सकती है। अपनी कॉमेन्ट्री के परिचय में, जेम्स बर्टन कॉफमैन ने मसीह और मूसा में बीस समानताओं को सूचीबद्ध किया। शीर्षक "मूसा मसीह का प्रकार" के अन्तर्गत, उसने उनके जन्म के संबंध में इन समानताओं को देखा: "दोनों यीशु और मूसा कुँवारी राजकुमारियों के पुत्र थे, यीशु अपने आश्चर्यजनक जन्म के द्वारा, मूसा गोद लिए जाने के द्वारा। दोनों ने ही निर्धनों के साथ गिने जाने के लिए बड़े आनंदों को छोड़ा था। यीशु ने स्वर्ग को छोड़ दिया; मूसा ने फ़िरौन के राजमहल को छोड़ दिया। दोनों का ही तिरिस्कार किया गया, यीशु का अपनी जाति के द्वारा, मूसा का अपने भाइयों के

द्वारा" (जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकेंड बुक ऑफ मोसेस* [ऐबीलीन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1985], xx-xxi, 23-24)।